

21 मई, 2023 को अपराह्न 3 बजे होटल विवांता में राम माधव की किताब "पार्टीशंड फ्रीड"
के विमोचन पर माननीय राज्यपाल का संबोधन

दिनांक 21 मई 2023, रविवार

समय : 2:30 PM

स्थान : होटल ताज विवांता, गुवाहाटी

सबसे पहले, आप सभी को मेरा नमस्कार।

"पार्टीशंड फ्रीडम" के लेखक श्री राम माधव जी,

पुलिस महानिदेशक श्री जीपी सिंह जी,

व्यतिक्रम ग्रुप के संस्थापक श्री सौमेन भारतीय जी,

उपस्थित देवियों और सज्जनों तथा

मीडिया के मेरे प्यारे साथियों।

"पार्टीशंड फ्रीडम" नामक किताब के विमोचन के मौके पर सबसे पहले मैं, लेखक राम माधव जी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

श्री राम माधव जी एक कुशल राजनेता होने के साथ-साथ एक प्रसिद्ध लेखक, विचारक और चिंतक हैं। इनकी यह नई किताब भारत की आज़ादी और साथ में आए विभाजन की भयावहता को रेखांकित करती है।

वास्तव में यह किताब एक ऐतिहासिक दस्तावेज है, जो आधुनिक इतिहास से जुड़े अनछुए - अनसुने पहलुओं को उजागर करती है। “पार्टीशंड फ्रीडम” के केंद्र में महात्मा गांधी और जिन्ना हैं। दोनों ही गुजरात से थे। दोनों ने विदेश से पढ़ाई की और बैरिस्टर बने। यहां सबसे रोचक तथ्य यह है कि आजादी की लड़ाई के दौरान जिन्ना चाहते थे कि पहले आजादी हासिल की जाए उसके बाद बाकी पहलुओं पर बात करेंगे।

दूसरी ओर, महात्मा गांधी हिंदू-मुस्लिम एकता के बड़े हिमायती थे। वे हमेशा हिंदू मुस्लिम एकता की भी बात करते थे। लेकिन जब आजादी का वक्त आया, तब अचानक जिन्ना का रुख बदल गया। इस पूरे घटनाक्रम को अपनी किताब में राम माधव जी ने सुन्दर ढंग से संजोया है।

लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि भारत का विभाजन तर्कहीन था और यह फैसला जल्दबाजी में लिया गया था। बंटवारे ने महात्मा गांधी को तोड़कर रख दिया था, जो राष्ट्र को सांप्रदायिक आधार पर विभाजित करने के खिलाफ थे। पर जो नहीं होना चाहिए, आखिरकार वही हुआ। परिणास्वरूप पाकिस्तान अस्तित्व में आया। इसके बारे में राम माधव जी ने किताब में विस्तार से लिखा है।

मुझे उम्मीद है कि राम माधव जी की यह नई किताब भी पाठकों द्वारा सराही जाएगी।

मित्रों,

आप सभी जानते हैं कि भारत दुनिया की सबसे प्राचीन सभ्यता है और इसे हमेशा ऐश्वर्य और ज्ञान की भूमि के रूप में देखा जाता रहा है। भारत को दर्शन और गणित के अलावा, उच्च कोटि के विज्ञान और प्रौद्योगिकी का श्रेय दिया जाता है, जिसने दुनिया भर के विद्वानों को आकर्षित किया। सभ्यता के विकास में भारत का स्थान ईसाई युग से कई हजार साल पहले का है।

अंग्रेजों के आगमन से पहले, भारतीय वस्तुओं को उनकी गुणवत्ता और शिल्प कौशल के लिए अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त थी। यूरोप या एशिया के किसी भी देश की तुलना में भारत के उद्योग और निर्माण क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि थी। यूरोपीय लोगों के आगमन से पहले ही भारत अनेक क्षेत्रों में काफी समृद्ध था। गणित, खगोल विज्ञान, भौतिकी और रसायन विज्ञान के साथ-साथ जैविक विज्ञान में भी भारत सबसे आगे था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, जो महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, अरबिंदो घोष, सरदार बल्लभ भाई पटेल, सुभाष चंद्र बोस और अन्य से प्रेरित था, उनके पास भारत की राष्ट्रीय चेतना की स्पष्ट दृष्टि थी।

देश के स्वतंत्रता संग्राम ने हालांकि हमारी राष्ट्रीय चेतना को आंदोलित किया, इसने मानव जीवन और संपत्ति दोनों को भारी नुकसान पहुँचाया। परिणामस्वरूप, जब भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र बना, तो वातावरण आनंद और उल्लास का नहीं था।

14 -15 अगस्त की रात जब हमारा देश अपनी आजादी का जश्न मना रहा था, जब जवाहरलाल नेहरू 'इंडियाज ट्रिस्ट विद डेस्टिनी' के बारे में अपना भाषण दे रहे थे, तब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चेहरे पर उदासी की छाया थी। उस दिन वे कोलकाता में थे। भारत को दो टुकड़ों में विभाजित किया गया। यह हमारे इतिहास और विरासत पर बहुत बड़ी चोट थी।

यह कैसी विडम्बना थी कि जब आजादी सभी के लिए खुशी का कारण होनी चाहिए, तब लाखों लोगों के लिए यह दुख और पीड़ा का क्षण बन गया। देश यह भलीभांति जानता है कि स्वतंत्रता प्रदान करते समय, अंग्रेजों ने पाकिस्तान को एक अलग राष्ट्र के रूप में बनाते हुए जल्दबाजी में भारत को दो भागों में विभाजित कर दिया। इस फैसले से रातों-रात लाखों लोग विदेशी बन गए, जो पीढ़ियों से अपना वतन समझकर रह रहे थे।

नए राष्ट्रों के दोनों पक्षों में एक साथ परेशानी शुरू हुई। भारत और पाकिस्तान के कई हिस्से इसकी चपेट में आ गए। उग्र भीड़ घूम रही थी, लोग उत्पात मचा रहे थे। यहां तक कि दोनों देशों के कुछ हिस्सों में आसमान भी आग की लपटों से जगमगा रहा था।

महात्मा गांधी के लिए, पाकिस्तान की कल्पना एक 'नैतिक पाप' थी। डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जो भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जेल में थे, उन्होंने "इंडिया डिवाइडेड" नामक किताब लिखी, जिसमें उन्होंने विभाजन की बुराइयों को रेखांकित करते हुए लिखा कि वह विचार कितना अतार्किक था। वह किताब 1946 में प्रकाशित हुई थी।

मित्रों,

भारत की आज़ादी पर केंद्रित राम माधव जी की यह नई किताब हमें अपने इतिहास को जानने-समझने की एक नई दृष्टि देगी - यह मेरा विश्वास है। हालाँकि, विभाजन से उपजी समस्याओं को कम करने के लिए हमें बहुत मेहनत करनी होगी और अपने देश को आगे ले जाना होगा। लेकिन यह विडम्बना ही है कि सबसे पुरानी सभ्यता और युवा देश होते हुए भी हम एक विशेष संकट से घिरे हुए हैं।

आजादी के बाद देश पर शासन करने वाली सरकारों की विफलता से समस्या और बढ़ती गई। भारत की प्राचीन चेतना से खींचे गए शासन के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक प्रतिमान बनाने के बजाय, आजादी के बाद देश पर शासन करने वाले सरकार के नेताओं ने पश्चिमी देश का अनुसरण करने की कोशिश की। इस प्रकार, हमने आधी सदी से अधिक समय बर्बाद कर दिया है और हमने भारत के प्रभुत्व को आगे बढ़ाने का एक ऐतिहासिक राष्ट्रीय अवसर खो दिया है।

हालांकि, अब स्थिति बदल गई है। 2014 से हमारी सरकार लोकतंत्र से मिले अवसर का उपयोग करने के लिए रोडमैप पर लगातार काम कर रही है। आजादी से पहले हमारे देश में जो जीवंतता थी, उसे फिर से खोजने के लिए अब हम एक मिशन मोड पर काम कर रहे हैं। हम

अमृतमय भारत बनाने के लिए हर दिन, हर कदम, हर यात्रा, हर प्रक्रिया को समर्पित कर रहे हैं।

यह पीछे बैठने का समय नहीं है। यह वह समय है जब हममें से प्रत्येक को उठना होगा और परिवर्तन लाने के लिए अपनी ऊर्जा का योगदान देना होगा। आइए, हम सब मिलकर एक भारत, श्रेष्ठ भारत बनाएं।

अंत में, मैं राम माधव जी को असम आने और उनकी पुस्तक का विमोचन करने के लिए हृदय से धन्यवाद देता हूं। आशा है कि उनकी पुस्तक अपने पाठकों को देश और उसके अतीत को जानने और उसके सर्वांगीण विकास के लिए काम करने में मदद करेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक व्यापक रूप से पढ़ी और सराही जाएगी।

धन्यवाद,

जय हिंद।